सम्पादकीय ..

# कर्मों का खाता

कई लोग सवाल उठाते हैं कि अच्छे लोगों पर कष्ट क्यों आते हैं, भगवान उन्हें कष्ट क्यों देते हैं? पहले तो हम यह जान लें कि भगवान कष्ट मिटाने वाले हैं, कष्ट देने वाले नहीं। रही बात अच्छे लोगों पर कष्ट आने की तो इसका उत्तर यह है कि उन्हें और अच्छा बनाने के लिए ही कष्ट आते हैं।

## मनोबल अधिक तो कष्ट खेल लगते हैं

हम पहनने के कपड़े भी धोते हैं और पोंछे को भी लेकिन पहनने वाले कपड़ों को बहुत रगड़ते हैं और पोंछे को यूँ ही पानी में से निकालकर सुखा देते हैं, कोई रगड़ाई नहीं। कारण यह है कि पहने जाने वाले कपड़ों को तो साफ-सुन्दर रखना है और पोंछे को तो वैसा ही रहना है। जिन्हें आगे बढ़ना है, ऊँचा चढ़ना है उन्हें रगड़ सहन करनी पड़ती है, जिन्हें सम्पूर्ण बनना है उन्हें कष्ट आते ही हैं पर उनका मनोबल इतना अधिक होता है कि उन्हें कष्ट, कष्ट लगते ही नहीं, खेल लगते हैं। साधारण व्यक्ति को वे कष्ट लगते हैं।

ईश्वरीय कर्त्तव्यों की यादगार पाण्डवों और कौरवों की कहानी को देखिए। पाण्डव भगवान से प्रीत बुद्धि हैं, चरित्रवान हैं और सहनशील हैं पर उन्हें राज्य में से अपना हक भी नहीं मिलता, परिवार के बड़ों का समर्थन भी नहीं मिलता और जिन प्रभु को वो दिन-रात याद करते हैं वे भी उनके कष्टों को कहीं भी कम करते नज़र नहीं आते। दूसरी तरफ दुर्योधन नास्तिक है, चरित्रहीन और अन्यायी है फिर भी पिता के राज्य में हर अधिकार उसे प्राप्त है, भविष्य का राजमुकुट भी उसी के सिर आने की सम्भावना है। राज्य के खज़ाने का और प्रजा का वह मनमाने ढंग से दुरुपयोग करता है। परिवार के मुख्य ताकतवर बड़ों का उसे पूरा सहयोग मिलता है और भगवान भी उसे उसके पापों का कोई फल देते हुए नज़र नहीं आते हैं।

## परिस्थिति एक परीक्षा है

आज भी गिने-चुने लोग पाण्डवों जैसी स्थिति में और अधिकतर लोग कौरवों जैसी स्थिति में जीते हुए मिल जाएंगे। इन दोनों प्रकार की स्थितियों के पीछे कर्मों की गहन गति को समझना अनिवार्य है। एक अच्छे व्यक्ति से उसका हक या पद छीना जाता है, यह उसके सामने एक परीक्षा है। देखना यह है कि वह इस परीक्षा को अपने आन्तरिक गुणों को सुरक्षित रखते हुए पार करता है या आसुरी अवगुणों का सहारा लेकर बदले पर उतर आता है। यदि आन्तरिक गुणों को और प्रभु के सहारे को नहीं छोड़ता और आसुरी बल को नकार देता है तो बाहरी दृष्टि से अपने हक से परित्यक्त दिखता है पर अन्दर ही अन्दर उसका पुण्य का खाता बढ़ने लगता है। भगवान भी उसके बढ़ते हुए पुण्य को देख प्रसन्न होते हैं और ऐसी गुप्त मदद करते हैं जो सांसारिक धन, वैभव तथा आराम के रूप में नहीं दिखती पर अन्दर ही अन्दर वह आत्मा शक्तिशाली तथा अनुभवी बनती जाती है। संसार को तो यह दिखता है कि इस सच्चे व्यक्ति को भगवान ने मदद क्यों नहीं दी पर वह सच्चा व्यक्ति स्वयं यह महसूस कर रहा होता है कि भगवान से जो ज्ञान, प्यार, सहयोग और गुप्त बल सहज रूप से मिल रहा है उसी की तरफ मन, बुद्धि लगाने में भलाई है। इस प्रकार की ऊँची सोच, ईश्वरीय प्रेम और हक छीनने वालों के प्रति भी मन में घृणा या बद्दुआ न रखने के कारण वह पुण्यों का धनी बनता जाता है।

## बद्दुआएँ कर देती हैं अस्थिर

दूसरी तरफ जिन्हें आसुरी बल से राज्याधिकार मिल जाता है वे इन्हीं शक्तियों के सहारे राज्य का संचालन भी करने लगते हैं। राज्य छीन लेना तो अल्पकाल की घटना है पर आसुरी

शक्तियों के सहारे राज्य को दीर्घकाल तक चलाना सम्भव नहीं है। यह सत्य तथ्य है कि तप से प्राप्त चीज़ का संचालन भी तप के साथ होता है और पाप से प्राप्त चीज़ का संचालन भी पाप से होता है। जिनसे राज्य छीना वे तो सहनशील थे, चुप रहे पर जिन पर राज्य करना है, उन पर आसुरी शक्तियों के प्रयोग से असन्तोष फैलता है। इस प्रकार प्रजा की और तथाकथित बड़ों की भी बद्दुआएँ इन आसुरी बल वालों को अन्दर से चिन्तित, परेशान, अवसाद-ग्रस्त, क्रोधित, कामी और अस्थिर कर देती हैं। वे निरन्तर डगमगाती गद्दी पर बैठे भय से कांपते रहते हैं। अपनी आन्तरिक अस्थिर हालत को छिपाने के लिए बाहरी संसाधनों, वैभवों का दुरुपयोग करते हैं और विलासिता का आवरण ओढ़ कर रखते हैं, इस प्रकार पापों से उत्पन्न अशान्ति को मिटाने के लिए और ज्यादा पाप करते हैं और पाप का घड़ा तेजी से भरता जाता है।

### सबकुछ मिल जाता है अच्छाई पर दृढ़ रहने से

अब देखिए, अच्छे लोगों का पुण्य का खाता जमा हो रहा है इसलिए वे अच्छाई के मार्ग पर दृढ़ रहने के लिए हर कठिनाई सहेंगे क्योंकि उन्हें पुण्य के बल से अखण्ड विजय प्राप्त होने का सृष्टि-ड्रामा का अटल विधान है। दूसरी ओर, पापियों के पाप का घड़ा भर रहा है, वे घृणित से घृणित कर्म करते हुए भी नहीं हिचकिचाएंगे, वे हर पाप करेंगे, क्योंकि इसी से पाप का घड़ा जल्दी भरेगा, फिर फूटेगा और फिर समूल नाश होगा। इस नाश के बाद ही अच्छे लोगों को निर्विघ्न हक मिलेगा। **अत: अच्छाई पर दृढ़ रहने वाले को सबकुछ मिलता है पर धैर्य रखना पड़ता है। बुराई के मार्ग पर चलने वाले को जल्दी में जो कुछ मिलता है वह उसे नष्ट करता हुआ स्वयं भी नष्ट हो जाता है।**

### पाप कर्म का फल है दुख

हमने धोबी को कपड़े धोते देखा है, वह जिस कपड़े को धोता है, उसे माथे से ऊपर अधिक ऊंचा उठाता है। कपड़ा समझता है कि वह मिट्टी से काफी ऊपर उठ गया है, हवा में उड़ रहा है और थोड़ी देर आनंद भी पाता है किन्तु वह यह नहीं समझता है कि उसे जितना ही ऊपर उठाया गया है, उतने ही जोर से धोने के पत्थर पर धोबी पटकेगा भी। जो पाप करते हैं वे भी सोचते हैं – अरे! दूसरों को दबाकर, सताकर, हक छीनकर हम भी ऊपर उठ गए परन्तु जब पाप का प्रतिफल भोगते हैं तब दुख में डूब जाते हैं पत्थर पर पटके गए धोबी के कपड़े की तरह। बुरे कर्म करके मनुष्य इतराता है किन्तु उनका भोग शुरू हो जाने पर पछताता है।

### पुण्य कर्म बनते हैं निमित्त भाव से

मनुष्य के रोजाना की जीवन-चर्या के कर्म व्यापार की तरह हैं। जैसे माता-पिता अपने बच्चों को पढ़ाते हैं, तो क्या हुआ उनके भी माता-पिता ने उनको पढ़ाया होता है। माता-पिता अपने बच्चों के लिए मकान बनाते हैं, तो क्या हुआ, बच्चे भी तो अपने बच्चों के लिए मकान बनवा ही देंगे। माता-पिता अपने बच्चों की शादी कराते हैं, तो बच्चे आगे चलकर अपने बच्चों की भी शादी कराते हैं। कहने का भाव यह है कि ये जो हमारे कर्म हैं वो हमारे कर्त्तव्य हैं, इनके करने से पुण्य कर्म जमा नहीं होते हैं। पुण्य कर्म वो हैं जो निमित्त भाव से, निमित्त बनकर, नि:स्वार्थ भाव से किये जाते हैं। जो कर्म सर्व के कल्याण के लिए ईश्वरीय मर्यादाओं, धारणाओं में रहते हुए, सदाचार, संयम का पालन करते हुए किए जाते हैं, वे ही पुण्य कर्म हैं। उन्हीं से पुण्य का खाता जमा होता है अन्यथा खाली का खाली रह जाता है।

रामचरितमानस में कहा गया है,

**कर्म प्रधान विश्व रचि राखा,**
**जो जस करहिं सो तस फल चाखा।**

विश्व को राम प्रधान नहीं कहा है, कर्म प्रधान कहा है। जीवन में परिणाम इस बात से नहीं आते कि हम क्या और कितना जानते हैं, परिणाम आते हैं कि हम करते क्या-क्या हैं।

**– ब्र.कु. आत्म प्रकाश**